RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.003

भारतीय समाज में बढ़ती राजनीतिक एवं समाजिक समस्याएं

अजय कुमार

छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, डी. ऐ. वी. महाविद्यालय, अबोहर, पंजाब

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 17 August 2020

Keywords
राजनीति, सामाजिक समस्याएं, प्रजाति, भ्रष्टाचार

***Corresponding Author**
Email: jaatsaab58318[at]gmail.com

ABSTRACT

भारतीय समाज की प्रकृति विभिन्नता की एकता वाली है। भारतीय समाज एक सुत्र में बंधा हुआ है चाहे यहां कितनी ही भाषा, प्रजाति,नस्ल के लोग हैं। पर वह आपस में प्रेम भाव में रहते हैं।पर वर्तमान समय को देखा जाए तो आज समाज के सामने बहुत सारी समस्याएं पैदा हो गई है।जो भारतीय समाज के लिए चुनौती है। समाज में अपराध, भ्रष्टाचार, हिंसा , भीड़ हत्या आदि तरह तरह की समस्याएं पैदा हुई है जो समाज के लिए हानीकारक है। जल्द ही इनको रोकने के उपाय नहीं किए गए तो यह भारतीय समाज के विनाश का कारण बन सकती है। इनकी दिन बे दिन बढ़ोतरी भी एक चिंताजनक विषय है।

परिचय-

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है । पर भारतीय समाज की प्रकृति को देखा जाए तो यह बहुत जटिल है। यहां पर भिन्न- भिन्न तरह कि संस्कृतियां,धर्म,जाति, नस्ल, भाषा एवं विचारों वाले लोग रहते हैं। यह ही विविधता ही इसकी पहिचान है। एम.एन. श्री निवासन ने भारतीय समाज की प्रकृति को समाजिक संरचना में विविधता को ही माना है। कभी भारतीय प्रदेश विश्व गुरु कहलाता था। पर आज इसकी प्रतिष्ठा को काफी चोट पहुंची है। वर्तमान समय में भारतीय समाज अनेक सामाजिक समस्याओं से ग्रस्त हैं । जो भारतीय समाज को अंदर ही अंदर खोखला करती जा रही है। भारतीय समाज की प्रमुख समस्याओं में जनसंख्या मे बढ़ौत्तरी, निर्धनता, बेरोजगारी, असमानता, अशिक्षा, गरीबी, आतंकवाद, घुसपैठ, बाल श्रमिक, श्रमिक असंतोष, छात्र असंतोष, भ्रष्टाचार, नषाखोरी, जानलेवा बीमारियां, दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण बालिका हत्या, विवाह- विच्छेद की समस्या, बाल अपराध, मद्यपान, जातिवाद, अस्पृश्यता की समस्या ये सभी समाजिक समस्याऐं के अन्तर्गत आती है। इन समस्याओं से इलावा ओर भी बहुत सारी समस्याओं से जूझ रहा है। भारतीय समाज में यह समस्याएं दिन- बे-दिन बढ़ रही है। जो इसके रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट है। यह समस्याएं इस प्रकार है:

1.जातिवाद:-

भारतीय समाज में अनेक जातियां हैं।इनकी पहचान भी अलग-अलग है। आज इन जातियों में एक दूसरे के जाति के प्रति असंतोष पैदा हुआ हैं। उच्चतम जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों के साथ भेदभाव किया जाता है। आज़ यह जातिवाद भारतीय समाज के लिए ऐक गंभीर समस्या का रूप धारण कर चुका है।समाज में जातिवादी हिंसा के मामले बढ़ रहे हैं। राष्ट्रिय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक भारत में वर्ष 2010-11-12-13-14-16 में क्रमश 33712, 33719, 33655, 39408, 47064, 40744 हजार मामले आए।इन मामलों में आए दिन वृद्धि होना चिंताजनक है

2. सांप्रदायिकता:-

भारतीय समाज के लिए संप्रदायिकता गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। भारतीय समाज में वर्तमान समय में एक दूसरे के धर्म के प्रति सहनशीलता की कमी आई है। भारतीय समाज में धार्मिक कट्टरवाद संप्रदायिकता को पैदा करता है।यह कट्टरवाद हिंसा को जन्म देता है। यहां तक कि वोटबैंक के वास्ते राजनीतिक दलों द्वारा धर्म का प्रयोग किया जाता है।भारत में संप्रदायिक हिंसा के मामले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। वर्ष 2002 के दंगों को देखा जाए तो इन दंगों में 2000 लोगों की मौत हुई। वहीं वर्ष 2017 में राम रहीम को कोर्ट द्वारा सजा सुनाए जाने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पर पंजाब हरियाणा में हुए दंगों में 41 मौतों हुईं। लोकसभा में प्रस्तुत की रिपोर्ट के आंकड़े इस प्रकार है:

वर्ष	दंगे	मौतों
2008	943	167
2009	849	125
2010	701	116
2011	580	91
2012	668	94
2013	823	133
2014	644	95
2015	751	97
2016	703	86
2017	822	211

इस तरह आंकड़े से देखा जाए तो संप्रदायिकता भारतीय समाज के लिए ऐक गंभीर समस्या बन चुकी है।

3. ग़रीबी:-

जो व्यक्ति अपनी बुनियादी जीवन निर्वाह करने की जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता वह गरीब है।यह समाज के लिए ऐक गंभीर समस्या है। गरीब लोग अपनी जीवन की आवश्यकताओं पूरी नहीं कर सकते।वह अच्छे भोजन, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, स्वच्छ जल आदि से वंचित रहते हैं। जिस कारण इनमें असंतोष पैदा होता है। यह फ़िर अपराधीक गतिविधियों को अंजाम देते हैं।जो समाज लिए खतरनाक है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में वर्ष 2015-16 के अनुसार 36.9 करोड़ लोग ग़रीब है।

4. बेरोजगारी:-

बेरोजगारी एक समाजिक- आर्थिक समस्या है जो आज उधोगक युग में पैदा हुई है।जो व्यक्ति बाजार में प्रचलित दर पर काम करने को तैयार हैं उसे काम नहीं मिलता तो बेरोजगार हैं। बेरोजगारी मानसिक तनाव को जन्म देती है।वह व्यक्ति प्रचलित व्यवस्था से असंतुष्ट होकर उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है।वह आतंकवादी भी बन सकता है।इस तरह वह समाज के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। बेरोजगारी की दर भारत में दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है जो एक चिंताजनक विषय है। भारत कि बेरोजगारी दर मार्च 2019 के हिसाब 9.3% है

5. बढ़ते महिलाओं के प्रति अपराध:-

महिलाओं के प्रति अपराध एक समाज के लिए शर्मनाक बात होती है।पर फिर भी आज महिलाओं के प्रति अपराध बढ़ रहे हैं। एक महिला समाज में आज अपने को असुरक्षित महसूस कर रही है।आज समाज के लिए महिलाओं के प्रति अपराध गंभीर समस्या बन चुकी है। महिलाओं के प्रति अपराध आमबात हो हो गई है। उनको घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है। महिलाओं के साथ बलात्कार कार्य स्थलों पर यौन उत्पीडन आम बात हो गई है। निर्भया कांड, हैदराबाद कांड इनके इलावा अन्य कांड भी दिल दहलाने वाले हैं। महिलाओं के साथ आम लोग तो है ही बहुत सारे गणमान्य के द्वारा भी अंजाम दिया जाता है। कुलदीप सेंगर, नित्यानंद आदि कानुन बनाने वाले भी लोग ऐसे कुकर्मों को अंजाम देते हैं। राष्ट्रिय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक आंकड़े इस प्रकार है:-

वर्ष	आंकड़े
2015	3,29,293
2016	3,38,954
2017	95,983
2018	1,05,000

इन आंकड़ों को देखा जाए तो भारतीय समाज के लिए यह ऐक कलंक है।जो महिलाएं शांति कि मूर्त है उस के प्रति अपराध किया जाना कहां की बहादुरी है।

6. बढ़ते बाल अपराध:-

क़ानूनी आधार पर 8 साल से लेकर 16 साल तक के उम्र के बच्चों द्वारा किए गए अपराधों को बाल अपराध की श्रेणी में लाया जाता है। बाल अपराध बढ़ती घटनाएं भारतीय समाज के लिए गंभीर चुनौती समस्या बनती जा रही है। जिस देश के भविष्य ही राह भटक जाए वह देश तरक्की नहीं कर सकता।यह बात भारत पर ही लागू हो रही।आज हर रोज़ बालकों द्वारा अपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। बाल अपराध के कई कारण हो सकते हैं जेसे मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, परिवारिक,रहन सहन आदि।यह कोई नवीन नहीं है।यह सदियों से चले आ रहे हैं। यह समाज की जड़ों को खोखला कर देते हैं। राष्ट्रिय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में आंकड़े इस प्रकार है:-

वर्ष	आंकड़े
2010	22,740
2011	25,125
2012	27936
2013	31725
2014	33526

7. नक्सलवाद:-

नक्सलवाद आतंकवाद का ही दूसरा नाम है। नक्सलवाद एक आंदोलन के रुप में शुरू हुआ था।जो आज़ ऐक भारतीय लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है। इसकी शुरुआत वर्ष 1967 में पच्श्रिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव में जमींदारों के शोषण के खिलाफ वहां के नौजवानों ने शुरू किया था। इसकी अगुवाई चारू मजूमदार ने भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी से अलग होकर की थी।यह ऐक समाजिक आर्थिक आंदोलन था। चारु मजूमदार माओवादी विचारधारा में विश्वास रखते थे।उनका मानना था गरीब किसानों,और मजदूरों की दुर्दशा का कार्ण सरकार की ग़लत नीतियां हैं।यह नीतियां बड़े जमींदारों को फायदा पहुंचाने के लिए बनाईं गई है।इन नीतियों के खिलाफ यह आंदोलन छोड़ा गया था। चारु मजूमदार के सहयोगी थे जिनका नाम कानू सान्याल था। इन दोनों ने मिलकर नौजवानों के साथ 1969 के भूमि अधिग्रहण बिल के खिलाफ नक्सलबाड़ी आंदोलन चलाया। इनकी सरकार से मांग थी ज़मीन उसी को देनी चाहिए जो इस पर काम करते हैं। जमींदारों का इस पर कोई अधिकार नहीं। इस आंदोलन ने उस समय सफलता प्राप्त की जब इन्हें ने पच्श्रिम बंगाल में 1977 में कांग्रेस को हराकर कम्युनिस्ट पार्टी की सर बनाईं। ज्योति बसु उस समय बंगाल के मुख्यमंत्री बने।क्षह ऐक समाजिक आर्थिक आंदोलन था।इसका मुख्य उद्देश्य समाज में आर्थिक समाजिक समानता लाना था। यह भारत में कम्युनिस्ट शासन लाने चाहते हैं।यह संसदिय लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते।जब 1971 में चारु मजूमदार की मौत हो गई उस के बाद यह आंदोलन कई भागों में विभक्त हो गया।यह आंदोलन जिस उद्देश्य के लिए बनाया गया था उस उद्देश्य से यह भटक गया। आज यह केन्द्रीय सत्ता के खिलाफ शुरू हो गया।यह अपने उद्देश्य को सिर्फ हिंसा के माध्यम से प्राप्त करना चाहता है। इनके द्वारा निर्दोष लोगों की हत्या कर दी जाती है। इनका जिन्ह क्षोत्रो में इनका प्रभाव है वहां यह विकास नहीं करने देते। इनके प्रभाव के क्षोत्रे में यह अपनी अदालतों स्थापित करते हैं। अपने मनमुताबिक फैसले सुनाते हैं। लोगों से टैक्स वसूली करते हैं। नक्सली गतिविधियां देश के 20 राज्यों में 223 ज़िलों के 2000 थाना क्षेत्रों में फ़ैली हुई है जिनमें प्रमुख राज्य हैं-: छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तामिलनाडु, पश्चिम बंगाल राज्य है। इनके प्रभाव में देश का छे फीसदी क्षेत्र हैं। इनके द्वारा की बार लोगों को जान मार का नुक़सान पहुंचाया जाता है।आज यह भारतीय समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुकी है। इनके द्वारा की गई घटनाएं के आंकड़े इस प्रकार है;-

वर्ष	नक्सली घटनाएं	शहिद पुलिसकर्मी	नागरिकों की मौत	गिरफ़्तार हुए
2014	231	8	86	516
2015	196	4	47	458
2016	196	9	61	526
2017	186	2	44	608
2018	118	9	27	515
2019	91	14	27	289

इस प्रकार इनका प्रभाव दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है जो भारतीय समाज के लिए ऐक गंभीर समस्या बन चुकी हैं।

8. भीड़ हत्या:-

भीड़ हत्या से अभिप्राय है कि किसी बिना व्यवस्थित न्याय प्रक्रिया के भीड़ द्वारा किसी व्यक्ति को शारीरिक प्रताड़ना देना या पीट पीट कर मार डालान शामिल हैं। यह काम आमतौर गुमराह होई भीड़ द्वारा किया जाता है। कितने निर्दोष लोगों की हत्या कर दी जाती है।यह ऐक समाज के लिए कितना आपत्तिजनक है सोच भी नहीं सकते।हाल में ही महाराष्ट्र में दो संतों कि हत्या गुमराह होई भीड़ ने पीट पीट कर दी। राष्ट्रिय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में वर्ष 2001 से वर्ष 2014 तक देश में 2290 महिलाओं कि हत्या डायन समझ कर भीड़ द्वारा पीट पीट कर दी गई।इडियास्पेड कि रिपोर्ट मुताबिक वर्ष 2012 से 2019 तक सुमदायिक घृणा के चलते 128 घटनाओं को अंजाम दिया गया। देखा जाए तो भीड़ हत्या भारतीय समाज के लिए धबा बन चुकीं हैं।

9. अनपढ़ता:-

शिक्षा व्यक्ति का तीसरा नेत्र होती है। शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय होता है। भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या अनपढ़ता है।आज भी भारतीय समाज में 35% लोग अनपढ़ हैं। अनपढ़ व्यक्ति वर्तमान समस्याएं को समझ नहीं सकता। अनपढ़ लोगों का शोषण भी समाज में किया जाता है। इन लोगों को गुमराह भी किया जाता है। जिसे यह अनुचित कार्य को अंजाम दे देते हैं जिसका खामियाजा समाज को भुगतना पड़ता है। अनपढ़ता के कारण समाज विकास नहीं करता।यह पीछे की ओर चला जाता है। अनपढ़ता के कारण समाज के लोग अंधविश्वासों

में घिर जाता है।आज यह ही स्थिति भारत में बिराजमान है।यह भारतीय समाज के रस्ते में बहुत बड़ी चुनौती है।

9. ऑनर किलिंग:-

ऑनर किलिंग का मतलब है कि अपने ही परिवार सदस्य का परिवार सदस्यों द्वारा हत्या करना आम तौर पर यह हत्या महिला सदस्य की की जाती है।यह हत्या समाजिक प्रतिष्ठा खातर कि जाती है।यह आम तौर पर तब की जाती है जब किसी युवक ओर युवती द्वारा अंतरजातिय विवाह करने की कोशिश या किया जाता है।आज के वक्त वी इसे की लोगों द्वारा स्वीकृत नहीं किया जाता जो एक रुढ़ीवादी सोच का परिणाम है।यह आम तौर ग्रामिण क्षेत्रे में देखने को मिलता है।आज भी यह घटनाएं घटित होना समाज के लिए धबा है। यह सब झुठी शान के खातिर किया जाता है। राष्ट्रिय अपराध ब्यूरो के रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2014 में 28, मामले वर्ष 2015 में 192 मामले , वर्ष 2016 में 68 मामले आए ।

10. नशाखोरी:-

नशाखोरी भारतीय युवा वर्ग को दीमक की तरह खाती जा रही हैं। भारतीय युवा वर्तमान नशें में लिप्त हो रहा। बहुत सारे युवा नशाखोरी के जाल में फस रहें हैं।यह नशा न मिलने पर किसी भी हद तक जा सकते हैं।आज भारत में लाखों रुपए ऐक दिन में नशें खरीदने में लगाए जा रहे हैं। इस नशाखोरी के वजह से समाज में आपराधिक घटनाए घटित होती है। समाजिक हिंसा, लूटमार, हत्या तक के कारण नशे तक जुड़े है।आज हजारों लोगों की मौत नशे के कारण हो रही है। जुलाई 2016 में राज्य सभा में राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक हर रोज़ 10 मौत नशें के कारण होती है। वहीं राष्ट्रिय सर्वेक्षण के अनुसार 73 लाख लोग देश में गांजा और भाग पीते हैं। जिसमें युपी पहले नंबर पर है।एक सर्वे के मुताबिक भारत में 16 करोड़ लोग हर रोज़ शराब पीने के आदी हैं।यह भारतीय समाज में एक चिंताजनक विषय बन गया है।

11. आतंकवाद:-

भारतीय समाज के लिए सबसे बड़ा ख़तरा आतंकवाद बनता जा रहा है।आज भारतीय प्रदेश आतंकवादी हिंसा से प्रभावित है। कितने मासूमों की जान आतंकवादी हमलों में जाती है। सबसे बड़ी चुनौती तो है आज भारतीय युवा भी आतंकवाद का रास्ता अपना रहें हैं।यह सब आर्थिक, समाजिक आदि समस्याओं के कारण होता है। आतंकवाद भारतीय समाज के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।यह ऐक राष्ट्र के विरुद्ध अघोषिइत युद्ध हैं। जिसमें बिना सामने आए राष्ट्र को नुक्सान पहुंचाना है। कश्मीर राज्य इससे ज्यादा प्रभावित हैं। आतंकवाद को पनपने में हमारा विरोधी राष्ट्र पाकिस्तान मदद करता है।वह भारत को संतुलित करने के लिए आतंकवाद का सहारा लेता है। भारत में आतंकवादी प्रमुख घटनांए इस प्रकार है।12 मार्च 1993 को मुंबई के बम ब्लास्ट में 257 लोगों की मौत हो गई। जम्मू कश्मीर की विधानसभा पर 1 अक्टूबर 2001 को हमला किया गया जिसमें 38 लोग मारे गए। वहीं 13 दिसंबर 2001 में भारत संसद पर जैशं ए मोहम्मद के आतंकवादीयो ने हमला किया जिसमें 6 पुलिस कर्मी शहिद हुए और 3 कर्मचारी मारे गए। वहीं 18 दिसंबर 2016 उड़ी में सेना सेक्टर पर हुए हमले में 20 जवान शहीद हुए। इन घटनाओं से पता चलता है किस तरह आतंकवाद समाज में अराजकता फैला रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज मे इनके इलावा बहुत सारी ओर भी समस्याएं हैं।यह सब समस्याएं भारतीय समाज के विकास में बाधक है। यह समस्याएं दिनों दिन बढ़ती जा रही है जो कि समाज के लिए एक चुनौती है।इन समस्याओं को दूर करने के लिए समाज को मिल जुलकर प्रयास करने होंगे। हमारी सरकार को कड़े कदम उठाने चाहिए। कठोर से कठोर कानूनों को लागू करके इन समस्याओं पर लगाम लगानी चाहिए।जे इन पर लगाम नहीं लगाई गई तो यह समाज के विनाश का कारण बन जाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

[1]. भारतीय समाज,राम आहुजा,रावत पब्लिकेशन
[2]. भारतीय समाज,श्याम नारायण दुबे
[3]. हमारी चुनौतीयां, बद्री नारायण, सुनिता सिंह
[4]. पालटिकस इन इंडिया, रजनी कोठारी
[5]. राष्ट्रिय अपराध ब्यूरो रिपोर्ट
[6]. रिलिजन, कास्ट,एंड पालिटिक्स इन इंडिया: किर्स्टोफ जफरलोट
[7]. अमर उजाला, देहरादून संस्करण,28 अप्रेल 2019
[8]. https//hindi.webdunia.com/regional-hindi-news
[9]. हिन्दुस्तान, देहरादून संस्करण,14 जुन 2013
[10]. भारत-पाक और अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, .पो. मान चन्द्र खंडेला, अविष्कार पब्लिकेशन

RRIJM 2015, All Rights Reserved